Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) _____
   (Name) _____
2. (Signature) _____
   (Name) _____

Roll No. | | | | | | | |
(In figures as per admission card)

Roll No._____
(In words)

Test Booklet No.

D-0609

Time : **2 1/2** hours]

PAPER-III
HISTORY

[Maximum Marks : **200**

Number of Pages in this Booklet : **32**

Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।

   इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
3. परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
5. उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
6. यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे ।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
8. **केवल नीले/काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें ।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।**

HISTORY
इतिहास

Paper – III
प्रश्नपत्र – III

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खंड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों का उत्तर अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

SECTION – I

खंड – I

Note : This section contains **five (5)** questions based on the following paragraph. Each question should be answered in about **thirty (30)** words and carries **five (5)** marks.

(5 × 5 = 25 Marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित अनुच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है । **(5 × 5 = 25 अंक)**

Ancient history has so far been constructed principally on the basis of literary sources, foreign and indigenous. Coins and inscriptions play some part, but the texts receive greater weightage. Now new methods must be adopted. Historical knowledge keeps growing. We have to be more critical about the dates and contents of the texts. This may be done if we examine the texts in the context of archaeological evidence. Initially, archaeologists were inspired by written texts, and several sites mentioned in the Brahmanical and Buddhist texts were excavated. This immensely enriched historical information, though the digging results did not always confirm the contents of the texts. Though full-length reports of many excavated sites are yet to be published, it is advisable to examine the texts in the context of archaeological findings. For the study of the age of the *Rig Veda* we have to take into account of the Gandhara grave culture in which the horse was used and the dead were cremated in the second millennium BC. We have to establish a co-relation between the later Vedic age, on the one hand, and the Painted Grey Ware and other types of archaeological finds, on the other. Similarly, early Pali texts have to be related to the Northern Black Polished Ware (NBPW) archaeology. Besides, the information derived from the Sangam texts needs to be co-related with that inferred from inscriptions and early Megalithic archaeology in peninsular India.

Archaeological evidence should be considered far more important than the long family trees fround in the Puranas. The Puranic tradition could be used to date Rama of Ayodhya to around 2000 BC, but diggings and extensive explorations in Ayodhya do not show any settlement around that date. Similarly, although Krishna plays an important role in the *Mahabharata*, the earliest inscriptions and sculptural pieces from Mathura between 200 BC and AD 300 do not attest to his presence. Given such difficulties, the ideas of an epic age based on the *Ramayana* and the *Mahabharata* must be discarded, although in the past it formed a chapter in most survey volumes on ancient India. Of course, several stages of social evolution in both the *Ramayana* and the *Mahabharata* can be detected. This is so because the epics do not belong to a single phase of social evolution; we may recall that they have undergone several editions. Further, on the basis of literary traditions and epigraphic material, Vardhamana Mahavira and Gautama Buddha are generally dated to the sixth century B.C, but the cities they visited are archaeologically not older than 400 BC and therefore the tradition-based dates of these great personalities need to be reconsidered.

पुरातन इतिहास आज तक मुख्यतया देशीय एवं विदेशी साहित्यिक स्रोतों के आधार पर ही निर्मित हुआ है । सिक्कों और अभिलेखों का भी इसमें कुछ हिस्सा है, परन्तु इसमें ग्रंथों को अधिक महत्त्व दिया है । अब नए उपायों को अवश्य अपनाया जाए । ऐतिहासिक ज्ञान की वृद्धि होती रहती है । पुरातन ग्रंथों के रचना काल और सामग्री के सम्बन्ध में हमें और अधिक समालोचक होना होगा । हम ऐसा कर सकते हैं यदि हम पुरातन ग्रंथों का पुरातात्त्विक साक्ष्य के संदर्भ में मूल्यांकन

करें । प्रारम्भ में, पुरातत्त्ववेता लिखित ग्रंथों से प्रेरित होते थे, और ब्राह्मणी, बौद्धिक ग्रंथों में वर्णित कई स्थानों पर खुदाई की गई । इसने ऐतिहासिक सूचना को खूब भरपूर किया, यद्यपि खुदाई के परिणामों ने सदैव इन ग्रन्थों की सामग्री की पुष्टि नहीं की । खुदाई के कई स्थानों सम्बन्धी सम्पूर्ण रिपोर्ट अभी प्रकाशित होनी है । ग्रंथों के मूल पाठ को पुरातत्त्व के अनुसन्धानों के संदर्भ में मूल्यांकित करना उचित होगा । ऋग्वेद काल के अध्ययन के लिए हमें गंधारा कब्र संस्कृति को भी देखना होगा जिसमें घोड़ा प्रयुक्त होता था और द्वितीय सहस्राब्दी पूर्व ईसा में मुर्दों को जलाया जाता था । एक ओर, हमें उत्तर वैदिक काल और दूसरी ओर चित्रित धूसर मृत्भाण्ड एवं अन्य प्रकार के पुरातत्त्व अनुसंधानों के बीच सह-सम्बन्ध स्थापित करना होगा । इसी प्रकार, प्रारम्भिक पालि ग्रंथों का सम्बन्ध उत्तरीय कृष्ण लोहित मृत्भाण्ड पुरातत्त्व विज्ञान से बैठाना होगा । इसके साथ-साथ, संगम ग्रंथों से ली गई सामग्री का प्रायद्वीपीय भारत में प्रारम्भिक महापाषाणी पुरातत्त्व और अभिलेखों द्वारा लगाये गए अनुमानों से सह-सम्बन्ध स्थापित करना होगा ।

पुरातात्त्विक साक्ष्य को पुराणों में उपलब्ध लम्बे वंशानुक्रम से कहीं अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए । पौराणिक परम्परा का प्रयोग अयोध्या के राम का समय 2000 ईसा पूर्व निर्धारण के लिए किया जा सकता है । परन्तु अयोध्या में की गई खुदाइयों और विस्तृत अनुसंधानों से इस काल के आस-पास इस स्थान पर किसी बस्ती का होना प्रकट नहीं होता । इसी प्रकार, यद्यपि कृष्ण 'महाभारत' में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं फिर भी मथुरा के 200 ईसा पूर्व - 300 ईसवी तक प्रारम्भिक अभिलेखों और प्राप्य मूर्तियों से उनका इस बीच यहाँ होना सत्यापित नहीं करता । ऐसी कठिनाइयों के रहते हुए, रामायण और महाभारत पर आधारित 'महाकाव्य काल' के विचार को त्याग दिया जाना चाहिए चाहे अतीत में पुरातन भारत के अधिकतम सर्वेक्षण ग्रंथों में ऐसा अध्याय होता था । यह मान्य है कि रामायण और महाभारत दोनों में सामाजिक विकास की अनेक अवस्थाओं का पता लगाया जा सकता है । ऐसा इसलिए है कि ये महाकाव्य किसी एक सामाजिक अवस्था से सम्बन्धित नहीं हैं । हमें स्मरण होगा कि उनके अनेक संस्करण निकल चुके हैं और साहित्यिक परम्पराओं और अभिलेखीय सामग्री के आधार पर, वर्धमान महावीर और गौतम बुद्ध का समय प्राय: 400 ईसा पूर्व निर्धारित किया जाता है, मगर जिन नगरों में वे गए वे 400 ईसा पूर्व से पुरातन नहीं हैं । इसलिए इन महान व्यक्तियों का जीवनकाल जो परम्परा-आधारित है, उस पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है ।

1. Why the author relies more on the archaeological data for writing history ?

   इतिहास लेखन में लेखक का पुरातात्त्विक सामग्री पर अधिक विश्वास क्यों है ?

2. The author argues to corroborate literary references with archaeological remains. Comment.

लेखक इस मत का है कि साहित्यिक संदर्भ और पुरातात्त्विक सामग्री एक दूसरे के सम्पोषक हों । टिप्पणी कीजिए ।

3. On what basis the author equates some archaeological remains with the Vedic cultures ? Explain.

लेखक किस आधार पर कुछ पुरातात्त्विक सामग्री को वैदिक संस्कृतियों के समकक्ष ठहराते हैं । स्पष्ट कीजिए ।

4. The author doubts the concept of epic age. Give reasons.

लेखक को महाकाव्य काल की अवधारणा के प्रति संशय है । इसके कारण बतलाइए ।

5. What inspires the author to review the date of Buddha and Mahavira ?

किन कारणों से लेखक गौतम बुद्ध और महावीर के जीवन काल-निर्धारण की समालोचना के लिए प्रेरित हुआ है ?

SECTION – II
खंड – II

Note : This section contains **fifteen (15)** questions, each to be answered in about **thirty (30)** words. Each question carries **five (5)** marks. **(5 × 15 = 75 Marks)**

नोट : इस खंड में **पाँच-पाँच (5-5)** अंकों के **पंद्रह (15)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । **(5 × 15 = 75 अंक)**

6. Write a note on the Harappan ceramic art.
हड़प्पा सभ्यता की कुम्हार-कला पर नोट लिखिए ।

7. Discuss the Varna system.
वर्ण-व्यवस्था की विवेचना कीजिए ।

8. Comment on the Western Kshatrapas.

पश्चिमी क्षात्रपों पर टिप्पण दीजिए ।

9. Underline the importance of Vikramshila.

विक्रमशिला के महत्त्व को रेखांकित कीजिए ।

10. Write a note on the concept of 'Sreni'.

'श्रेणी' की अवधारणा पर एक नोट लिखिए ।

11. Throw light on 'Turkau-i-Chahlghani**.**

'तुर्का-इ-चहलघनी' पर प्रकाश डालिए ।

12. Discuss the functions of 'Shahna-i-Mandi'.

'शाहना-इ-मण्डी' के कार्यों की विवेचना कीजिए ।

13. Examine the changes introduced by Shahjahan in Mansabdari system.

मनसबदारी व्यवस्था में शाहजहाँ द्वारा किये गये परिवर्तनों का परीक्षण कीजिए ।

14. Discuss Shivaji's concept of Swarajya.

शिवाजी की स्वराज्य की अवधारणा की विवेचना कीजिए ।

15. Trace the efforts made by Akbar to improve the condition of women.

स्त्रियों की स्थिति सुधारने में अकबर के प्रयासों को अनुरेखित कीजिए ।

16. Discuss the contributions of Poona Sarvajanik Sabha.

पूना सार्वजनिक सभा के योगदान की व्याख्या कीजिए ।

17. Tangturi Prakasham's contribution to freedom movement. Discuss.

तंगतूरी प्रकाशम के स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान की व्याख्या कीजिए ।

18. In what way Baroda was considered a model Princely State ? Discuss.

किस प्रकार बड़ौदा को एक आदर्श राजसी राज्य समझा गया ? व्याख्या कीजिए ।

19. Explain Lenin's Theory that Imperialism was the highest stage of Capitalism.

लेनिन का सिद्धान्त कि साम्राज्यवाद पूँजीवाद की सर्वोच्च अवस्था थी स्पष्ट कीजिए ।

20. Write E.H. Carr's views on causation in history.

ई. एच. कार के इतिहास में कारणता के बारे में विचारों को लिखिए ।

SECTION – III

खंड – III

Note : This section contains **five (5)** questions from each of the electives/specialisations. The candidate has to choose only one elective/specialisation and answer all the **five** questions from it. Each question carries **twelve (12)** marks and is to be answered in about **two hundred** (**200**) words. **(12 × 5 = 60 Marks)**

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से **पाँच (5)** प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी में से पाँचों प्रश्नों का उत्तर देना है । प्रत्येक प्रश्न **बारह (12)** अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **दो सौ (200)** शब्दों में अपेक्षित है । **(12 × 5 = 60 अंक)**

ELECTIVE – I

विकल्प – I

21. Discuss the megalithic culture.

महापाषाण काल की संस्कृति की विवेचना कीजिए ।

22. Bring out the changes in economy from Rig Vedic to later Vedic age.

ऋग्वेद से उत्तरवैदिक काल तक आर्थिकता में आए परिवर्तनों को स्पष्ट कीजिए ।

23. Comment on the literary development from A.D. 400 to 700.
400 से 700, ईसा उपरांत, साहित्यिक विकास पर टिप्पणी कीजिए ।

24. Write a note on the development of regional states in eastern India.
पूर्वी भारत के क्षेत्रीय राज्यों के विकास पर एक नोट लिखिए ।

25. Examine the development of temple architecture in South India.
दक्षिणी भारत में मंदिर निर्माण कला के विकास का मूल्यांकन कीजिए ।

OR/अथवा

ELECTIVE – II
विकल्प – II

21. Discuss Muhammad Tughlaq's relations with his nobles. Why his efforts to create broad based nobility failed ?
मुहम्मद तुगलक का उसके अमीरों के साथ सम्बन्धों की विवेचना कीजिए । उसकी एक व्यापक अमीर वर्ग को स्थापित करने की नीति क्यों असफल रही ?

22. Write a note on the 'Chishti Silsila' of the Sufis.
सूफियों की 'चिश्ती सिलसिला' पर टिप्पणी लिखिए ।

23. Discuss the view that the decline of Mughal Empire was due to the Jagirdari crisis.
इस मत की विवेचना कीजिए कि मुगल साम्राज्य का पतन जागीरदारी संकट के कारण हुआ ।

24. Discuss the nature of Mughal Mewar relations from 1572 to 1597 A.D.
1572 से 1597 ई. तक मुगल - मेवाड़ सम्बन्धों की प्रकृति की विवेचना कीजिए ।

25. Throw light on the development of religious policy of Akbar from 1562 to 1582 A.D.
1562 से 1582 ई. तक अकबर की धार्मिक नीति के विकास पर प्रकाश डालिए ।

OR/अथवा

ELECTIVE – III
विकल्प – III

21. Subsidiary Alliance enabled the British to expand in India. Discuss.
सहायक सन्धि ने ब्रिटिश को भारत में विस्तार करने योग्य बनाया । व्याख्या कीजिए ।

22. Discuss the various measures taken for women's upliftment in the 19th Century.
19वीं शताब्दी में स्त्रियों के उत्थान के लिए किए गए विभिन्न उपायों की व्याख्या कीजिए ।

23. Harijan upliftment occupied centre stage in the national politics between 1920 – 1947. Discuss.
1920-1947 के मध्य हरिजन उत्थान राष्ट्रीय राजनीति के केन्द्र में विचारणीय रहा । व्याख्या कीजिए ।

24. Analyse the mass mobilization technique of Mahatma Gandhi.
महात्मा गांधी के सामूहिक लामबन्धी तकनीक का विश्लेषण कीजिए ।

25. Assess the vision of Dr. B.R. Ambedkar as reflected in the Indian Constitution.
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की भारतीय संविधान में दूरदृष्टि परिलक्षित है, का मूल्यांकन कीजिए ।

SECTION – IV
खण्ड – IV

Note : This section consists of one essay type question of **forty** (**40**) marks to be answered in about **one thousand** (**1000**) words on any **one** of the following topics. **(40 × 1 = 40 Marks)**

नोट : इस खंड में एक **चालीस (40)** अंकों का निबन्धात्मक प्रश्न है जिसका उत्तर निम्नलिखित विषयों में से केवल **एक** पर, लगभग **एक हजार (1000)** शब्दों में अपेक्षित है । **(40 × 1 = 40 अंक)**

26. Examine the relative importance of natural and social forces in the development of a civilisation.

सभ्यता के विकास में प्राकृतिक एवं सामाजिक शक्तियों के आनुपातिक महत्त्व का मूल्यांकन कीजिए ।

OR/अथवा

Discuss the main features of Indo-Islamic architecture in the light of important monuments from 1206 to 1526 A.D.

1206 ई. से 1526 ई. तक के महत्त्वपूर्ण स्मारकों के संदर्भ में इण्डो-इस्लामिक वास्तुकला की मुख्य विशेषताओं की विवेचना कीजिए ।

OR/अथवा

Analyse how and why the Indian National Congress remained at the centre stage of the Indian Freedom Movement.

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कैसे और क्यों केन्द्र में रही, का विश्लेषण कीजिए ।

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	

Total Marks Obtained (in words) .....

(in figures) .....

Signature & Name of the Coordinator .....

(Evaluation) Date .....